

जैन दर्शन
पत्र संख्या - DSCC - 8
पाठ्यक्रम विवरणम् -
सप्ततत्त्वमीमांसा

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * जैनपरम्परायां सप्ततत्त्वानि नवपदार्थाः वा, तेषां निर्वचनं स्वरूपनिर्देशश्च, तत्त्वार्थश्रद्धानं यथा जायेत, तथा तत्त्वानाम् अर्थानाञ्च विवेचनम्। तत्र मूलतत्त्वद्वयम् जीवाजीवौ । उभयोः संयोगवियोगहेतोः तदितरतत्त्वानामवधारणा ।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * जीवतत्त्वं जीवद्रव्यञ्च तदुभयप्ररूपणायाः प्रयोजनम्, चेतनालक्षणो जीवः, तदितरलक्षणोऽजीवः, अजीवतत्त्वम् अजीवद्रव्यञ्च तदुभयप्ररूपणया प्रयोजनम्, जीवाऽजीवतत्त्वयोरर्थाधिगमः । जीवतत्त्वस्वरूपनिर्णयः, अजीवतत्त्वस्वरूपनिर्णयः, तदुभयोः समीक्षणदिशा विचारः ।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * आस्रवतत्त्वम्, तत्स्वरूपभेदादिविवेचनम्, आस्रवस्य अधिकरणद्वयम्, तदुभययोः विवेचनम्, आस्रवस्य बन्धहेतुत्वम्, शुभाशुभास्रवयोः द्रव्यभावास्रवयोः वर्णनम् । बन्धतत्त्वम्, जीवकर्मणोर्बन्धत्वविचारः, द्रव्यभावबन्धविचारणा, प्रमुखा बन्धहेतवः, बन्धभेदाः प्रकृतिप्रदेशस्थित्यनुभागनामानः ।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * संवरतत्त्वं निर्जरा तत्त्वं मोक्षतत्त्वञ्च । एतेषां स्वरूपभेदादिविवेचना । मोक्षमार्गे संवरनिर्जरयोः प्रादुर्भूतिः भूमिका च । मोक्षः तत्स्वरूपं तदधिकारिणश्च ।



पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - षड्दर्शनसमुच्चयः (हरिभद्रसूरिः) भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

- सहायकग्रन्थाः**
1. तत्त्वार्थवृत्तिः (श्रुतसागरसूरिः) भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
 2. जैनदर्शन मनन और मीमांसा (आचार्य महाप्रज्ञ) जैनविश्व भारती, लाडनूँ
 3. जैनदर्शनसार (पं. चैनसुखदास जी) वीर पुस्तक भण्डार, जयपुर
 4. जैनदर्शन (पं. महेन्द्रकुमार जैन न्यायाचार्य) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी
 5. तत्त्वार्थवार्तिकम् (भट्टाकलङ्कः) भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
 6. सर्वार्थसिद्धिः (पूज्यपादः) भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
 7. जैनदर्शने मुक्तिमार्गः (प्रो. एस. के. सिंघई) जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
 8. सिद्धान्तसार संग्रह (आ. नरेन्द्रसेन) जीवराज जैन ग्रन्थ माला, फलटण

जैन दर्शन

पत्र संख्या - DSCC - 9

पाठ्यक्रम विवरणम् -

अनेकान्तस्याद्वादविवेचना

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * अर्थोऽनेकान्तः, अनेकान्तपदस्य सार्थकता, अनेकान्तमधिगन्तुमुपायाः, तदधिगमफलम्, अनेकान्तपरिज्ञानेन लोकव्यवहारस्थितिः । अनेकान्तस्य विविधा आयामाः ।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * स्याद्वादस्य अवधारणा, स्यात् पदस्य रूढार्थः, तत्प्रयोजनम्, भाषया तत्त्वाधिगमसिद्धान्तः स्याद्वादः, वादव्यवहारेषु तस्यापरिहार्यता। वक्तृश्रोतृषु विवक्षाधिगमवादव्यवहारहेतुः स्याद्वादः । स्याद्वादेन शास्त्राणामधिगमः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * सप्तभंगीन्यायः, सप्तानां भंगानां समाहारः तत्प्रयोजनञ्च सप्तभंगव्यवहारस्य मर्यादा कारणता च। वस्तुनि भावाऽभावादिविरुद्धधर्मयुगलानां सिद्धिः। सप्तभंगन्यायसम्मतो सिद्धान्तस्याद्वादः।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- * सप्तभंगीभेदनिदर्शनम्प्र माणसप्तभंगी नयसप्तभंगी।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - सप्तभङ्गीतरङ्गिणी (विमलदासः) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

सहायक ग्रन्थाः -

- * जैनदर्शन में अनेकान्तवाद- एक परिशीलन (प्रो. अशोक कुमार जैन) श्री दिग. जैन संघी मन्दिर सांगानेर
- * नय की अवधारणा (प्रो.धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र) मालेर कोटरा, पंजाब
- * स्याद्वाद- एक अनुशीलन (सम्पा. पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ) जैन विद्या संस्थान, श्री महावीर जी
- * जैनदर्शन में नयवाद (डॉ. सुखनन्दन जैन) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- * दार्शनिक समन्वय की दृष्टि - नयवाद (प्रो.अनेकान्त जैन) अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
- * स्याद्वाद और सप्तभङ्गी (डॉ. भिखारीराम यादव) पार्श्वनाथ विद्यापीठ शोध संस्थान, वाराणसी

जैन दर्शन

पत्र संख्या - DSCC - 10

पाठ्यक्रम विवरणम् -

मुनिधर्मः

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- मुनिधर्मस्य अवधारणा, मुनिलिंगस्यदाने पात्रता, श्रमणस्य मुनेर्वा स्वरूपम्, मुनेः मूलगुणाः, पंचमहाव्रतानि, पंचसमितयः, पंचेन्द्रियजयः, षडावश्यकानि, अचेलकत्वम्, अस्नानम्, केशलोचः, अदन्तधोवनं, स्थितिभुक्तिः, दिवसैकभुक्तिः, क्षितिशयनञ्च।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- साधोः गुणोत्कर्षाय त्रिगुप्तिसमाचारः, मनोगुप्तेः, वचोगुप्तेः, कायगुप्तेः च विवेचनम्, द्वादशविधतपश्चरणानुशासनम्, द्वाविंशतिपरीषहजयाः, तैश्च चारित्ररक्षणम्।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- दशविधधर्मानुचर्या, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति धर्माणांस्वरूपाख्यानम्।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

- अनुप्रेक्षाचिन्तनम्, अनुप्रेक्षाचिन्तनस्य प्रयोजनम्, द्वादशानुप्रेक्षाणाम् अनित्याशरणसंसारै कत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यातानां स्वरूपख्यापनम्।

=====

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - मूलाचारः (आचार्यवट्टकेरः) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

सहायकग्रन्थाः -

- * समणसुत्तं, समाख्यातिटीका, (प्रो.एस.के. सिंघई) प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूँ
- * रयणसारः (आचार्यकुन्दकुन्दः) जैनेन्द्र छापाखाना, कोल्हापुर
- * पुरुषार्थसिद्ध्युपायः (आ. अमृतचन्द्रः) पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
- * अनगारधर्माभूत (पं. आशाधर) श्रीमद् रायचन्द्र आश्रम, अगास
- * आवश्यक निर्युक्ति (सम्पा. प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी)
- * आवश्यक निर्युक्ति (सम्पा. समणी कुसुमप्रज्ञा) जैनविश्व भारती, लाडनूँ
- * तत्त्वार्थवार्तिकम् (भट्टाकलङ्कः) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- * मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन (प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी) पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी